Knowledgeable Research Vol.1, No.11, June 2023. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research
An International Open-access Peer-reviewed Journal
Vol-1, No-11, *June 2023*
Web: http://knowledgeableresearch.com/

समकालीन भारतीय कला में प्रयुक्त तकनीकें और विभिन्न माध्यम

हरिनाम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर एचित्रकला विभाग आर्मापुर पी. जी. कॉलेज कानपुर

ईमेलःsinghhari1134@gmail.com

****

शोध सार

समकालीन भारतीय कला एक शानदार और निरंतर विकसित होने वाला क्षेत्र है जो नई तकनीकों, माध्यमों और विषयों को अपनाने के साथ-साथ जीवनशैली की गहराई से आकर्षित करता है। सामान्य रणनीतियों की पुनर्कल्पना से लेकर पहचान, समाज और पर्यावरण की वर्तमान अभिव्यक्तियों तक, भारतीय कलाकार रचनात्मकता और नवीनता की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। चूँकि वे स्थानीय और वैश्विक दोनों मुद्दों से जुड़ते हैं, आधुनिक भारतीय कला की दुनिया एक गतिशील और रोमांचक क्षेत्र बनी हुई है जो अंतर्राष्ट्रीय कला परिदृश्य पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ने की गारंटी देती है।

Key Words: भारतीय कला, रचनात्मक नवाचार, तकनीकों, समकालीन संदर्भ

****

परिचय

समकालीन भारतीय कलाकृति पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय रूप से उन्नत हुई है, जो क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक प्रभावों और रचनात्मक नवाचार को दर्शाती है। सामान्य और अत्याधुनिक तत्वों के संयोजन के साथ, भारतीय कलाकारों ने अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने और अंतरराष्ट्रीय कला परिदृश्य से जुड़ने के लिए रणनीतियों और माध्यमों की एक विस्तृत श्रृंखला को अपनाया है। यह लेख आधुनिक भारतीय कला की आकर्षक दुनिया पर प्रकाश डालता है, उन रणनीतियों और माध्यमों की खोज करता है जो कलाकार अपनी उत्कृष्ट कृतियों को बनाने के लिए किराए पर लेते हैं। पारंपरिक तकनीकों की फिर से कल्पना की गई

भारतीय कलाकृति का एक लंबा इतिहास है, जिसकी जड़ें सिंधु घाटी जैसी ऐतिहासिक सभ्यताओं तक फैली हुई हैं। पारंपरिक तरीके और रचनात्मक अभिव्यक्ति के प्रकार फिर भी अत्याधुनिक भारतीय कला में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखते हैं,

हालांकि उन्हें समकालीन संदर्भ के अनुरूप बार-बार पुनर्व्याख्या और पुनर्कल्पित किया जाता है। इन नियमित रणनीतियों में शामिल हैं:

लघु चित्रकला: लघु चित्रकला, एक सामान्य भारतीय कलाकृति, ने वर्तमान कला में पुनरुत्थान देखा है। कलाकार अब दृष्टिगत रूप से आकर्षक कृतियाँ बनाने के लिए इस समस्याग्रस्त और सटीक दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं जो अक्सर वर्तमान मुद्दों को मानक शैली के साथ जोड़ते हैं। लघु कलाकृतियाँ चमकीले रंगों, जटिल विवरण और कहानी कहने के उपयोग के लिए पहचानी जाती हैं।

मधुबनी पेंटिंग: मधुबनी पेंटिंग, मूल रूप से बिहार के मिथिला क्षेत्र से, एक अन्य सामान्य कलाकृति संरचना है जिसने वर्तमान भारतीय कला में अपना रास्ता बना लिया है। कला के ताज़ा, चमकदार हिस्से बनाने के लिए कलाकार नियमित रूप से विशेष ज्यामितीय पैटर्न और प्रकृति और पौराणिक कथाओं के मुद्दों को अपनाते हैं।

पिछवाई कला: भगवान कृष्ण की पूजा में निहित पिछवाई पेंटिंग को अत्याधुनिक भारतीय कला में फिर से शामिल किया गया है। ये बड़ी, रंगीन कलाकृतियाँ आम तौर पर कृष्ण की जीवन शैली के कई पहलुओं को दर्शाती हैं और कलाकारों ने अपनी रचनाओं में आध्यात्मिकता और परंपरा की खोज के लिए इन्हें अपनाया है।

तंजौर पेंटिंग: सोने की पत्ती और अर्ध-कीमती पत्थरों के उपयोग के लिए पहचानी जाने वाली तंजौर पेंटिंग को आधुनिक कलाकारों द्वारा दृश्य रूप से सुंदर और आध्यात्मिक रूप से चार्ज किए गए हिस्सों को बनाने के लिए तैयार किया जा रहा है जो अत्याधुनिक कलाकृति की दुनिया में संस्कृति का स्पर्श लाते हैं।

वारली कला: वारली कला, महाराष्ट्र की वारली जनजाति से उत्पन्न हुई, सरल, ज्यामितीय आकृतियों और दैनिक जीवन की विषय-वस्तुओं का उपयोग करती है। समकालीन कलाकार जीवन शैली और आधुनिकता के संयोजन के साथ विचारोत्तेजक भागों को बनाने के लिए इन कारकों का उपयोग करते हैं।

भारतीय कला में समकालीन माध्यम

जबकि सामान्य तरीके वर्तमान भारतीय कला को प्रभावित कर रहे हैं, कलाकारों ने अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने के लिए मौजूदा माध्यमों की एक विस्तृत श्रृंखला को भी अपनाया है। ये आधुनिक माध्यम भारतीय समाज की विकसित होती प्रकृति और अंतरराष्ट्रीय कला परिदृश्य के साथ इसके अंतर्संबंध को दर्शाते हैं। वर्तमान भारतीय कलाकारों द्वारा खोजे गए कुछ माध्यमों में शामिल हैं

ऐक्रेलिक और तेल पेंटिंग: ऐक्रेलिक और तेल कलाकृति अत्याधुनिक भारतीय कला में सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले माध्यमों में से हैं। कलाकार इन बहुमुखी रंगों का उपयोग दृश्यात्मक रूप से आकर्षक और भावनात्मक रूप से प्रेरित कार्यों को बनाने के लिए करते हैं जो सामाजिक समस्याओं से लेकर निजी अभिव्यक्ति तक कई विषयों की खोज करते हैं।

मिश्रित मीडिया: मिश्रित मीडिया कला, जो कई सामग्रियों और तकनीकों को जोड़ती है, वर्तमान भारतीय कलाकारों के बीच

एक प्रसिद्ध इच्छा है। यह माध्यम प्रयोग और बहुआयामी, बनावट वाली कलाकृतियों के आगमन को मंजूरी देता है।

डिजिटल कला: डिजिटल तकनीक के निर्माण के साथ, कई भारतीय कलाकारों ने डिजिटल कला को अपनाया है, जिसमें डिजिटल पेंटिंग, फोटो डिज़ाइन और 3डी मॉडलिंग शामिल हैं। डिजिटल कलाकृति नए आविष्कारी अवसरों की खोज करने और ऑनलाइन सिस्टम और सोशल मीडिया के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय लक्षित दर्शकों को प्राप्त करने के लिए एक मंच प्रस्तुत करती है।

इंस्टालेशन आर्ट: इंस्टालेशन आर्टवर्क को आधुनिक भारतीय कलाकृति परिदृश्य में पहचान मिली है। कलाकार व्यापक, बड़े पैमाने पर इंस्टॉलेशन बनाते हैं जो दर्शकों से संवेदी और भावनात्मक स्तर पर बातचीत करते हैं। ये प्रतिष्ठान अक्सर जरूरी सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय मुद्दों से निपटते हैं।

वीडियो कला: वीडियो कलाकृति कोई अन्य आधुनिक माध्यम है जिसका उपयोग भारतीय कलाकार अपने संदेश लाने के लिए करते हैं। वीडियो इंस्टॉलेशन और डिजिटल स्टोरीटेलिंग जटिल कथाओं को खोजने और विचारों और अवधारणाओं की एक विशाल विविधता को लाने के लिए विशेष संभावनाएं प्रदान करती है।

स्ट्रीट आर्ट: स्ट्रीट आर्ट भारत में सामाजिक और राजनीतिक टिप्पणी के लिए एक प्रभावी माध्यम बन गया है। भित्तिचित्र, भित्तिचित्र और सड़क स्थापनाएँ पूरे शहर में देखी जा सकती हैं, जो सार्वजनिक कलाकृति के एक रूप के रूप में काम करती हैं जो जनता से जुड़ती हैं।

समसामयिक विषयों का प्रभाव

समकालीन भारतीय कला मूलतः पिछली परंपराओं का अनुकरण नहीं करती; यह वर्तमान विषयों, चुनौतियों और आकांक्षाओं से भी जुड़ा हुआ है। कलाकार अपने परिवेश और अनुभवों से विचार आकर्षित करते हैं, और उनके काम अक्सर विषय-वस्तुओं की एक विस्तृत श्रृंखला से निपटते हैं भारत की विभिन्न संस्कृति, भाषाएँ, धर्म और परंपराएँ अक्सर आधुनिक कला में चित्रित की जाती हैं। कलाकार पहचान, बहुसंस्कृतिवाद और एक संयुक्त राज्य में रहने की जटिलताओं के विषयों की खोज करते हैं। इतनी समृद्ध विविधता के साथ।कई वर्तमान भारतीय कलाकार लैंगिक समानता, गरीबी, पर्यावरणीय गिरावट और राजनीतिक भ्रष्टाचार सहित तत्काल सामाजिक मुद्दों से निपटने के लिए अपने काम का उपयोग करते हैं। ये कलाकार अक्सर परिवर्तन के समर्थक के रूप में काम करते हैं और अपनी कला के माध्यम से महत्वपूर्ण बातचीत को जन्म देते हैं। भारत के तेज़ आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण का यहाँ के समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। समकालीन कलाकार अक्सर उपसंस्कृति और आधुनिकता के बीच बातचीत का निरीक्षण करते हुए, इस परिवर्तन के परिणामों की खोज करते हैं। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति में गहराई से समाई हुई है, और कई आधुनिक कलाकार धार्मिक विषयों और पौराणिक कथाओं की खोज के लिए अपने काम का उपयोग करते हैं। ये मुद्दे तेजी से बदलती दुनिया में प्रेरणा, सांत्वना और प्रतिबिंब का

स्रोत हो सकते हैं। भारत और दुनिया के सामने आने वाली पर्यावरणीय चुनौतियों को देखते हुए, कलाकार पारिस्थितिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए नियमित रूप से अपने शिल्प की ओर रुख करते हैं। विभिन्न माध्यमों से, वे ऐसे हिस्से बनाते हैं जो दर्शकों से कार्रवाई करने और पर्यावरण की रक्षा करने का आग्रह करते हैं।

उभरते कलाकार और कला आंदोलन

समकालीन भारतीय कलाकृति एक गतिशील और विकासशील क्षेत्र है, जिसमें नए कलाकार और कलाकृतियाँ लगातार उभरती रहती हैं। यहां कुछ उत्कृष्ट उदाहरण दिए गए हैं:

प्रगतिशील कलाकारों का समूह: 1940 के दशक में गठित यह समूह, जिसने एम.एफ. जैसे दिग्गजों की रक्षा की। हुसैन, एस.एच. रज़ा, और एफ.एन. सूजा ने आधुनिक भारतीय कला को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके कार्यों में नियमित रूप से भारतीय और पश्चिमी शैलियों का मिश्रण होता था, जो उस समय के बदलते रचनात्मक परिदृश्य को दर्शाता था।

बड़ौदा स्कूल: बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में ललित कला संकाय वर्तमान भारतीय कला का केंद्र रहा है। इसने भूपेन खाखर, गुलाममोहम्मद शेख और नलिनी मालानी सहित कई प्रभावशाली कलाकारों को विकसित किया है।

समकालीन भारतीय मूर्तिकला: वर्तमान भारतीय कला में मूर्तिकला को प्रमुखता मिली है, जिसमें सुबोध गुप्ता और अनीश कपूर जैसे कलाकारों ने दुनिया भर में प्रशंसा प्राप्त की है। उनके काम अक्सर मानक मूर्तिकला विधियों को समसामयिक विषयों और सामग्रियों के साथ मिलाते हैं।

कोच्चि-मुज़िरिस बिएननेल: कोच्चि-मुज़िरिस बिएननेल भारत में सबसे बड़े आधुनिक कला आयोजनों में से एक है। यह उभरते और स्थापित कलाकारों को अपना काम प्रदर्शित करने और विश्व दर्शकों के साथ बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

स्ट्रीट आर्ट आंदोलन: स्ट्रीट आर्ट, जिसमें भित्तिचित्र और भित्ति चित्र शामिल हैं, भारत में एक उज्ज्वल और सामाजिक रूप से जुड़ा आंदोलन बन गया है। डाकू, अनपू वर्की और हर्ष रमन जैसे कलाकारों ने प्रभावी संदेश देने के लिए सड़कों को अपने कैनवास के रूप में इस्तेमाल किया है।

गैलरी, संग्रहालय और त्यौहारों की भूमिका

समसामयिक भारतीय कला ने भारत के भीतर और वैश्विक मंच पर दीर्घाओं, संग्रहालयों और कला मेलों से बढ़ता ध्यान और समर्थन प्राप्त किया है। ये संरचनाएं कलाकारों को दृश्यता और संपत्ति प्रदान करती हैं जिन्हें वे आगे बढ़ाना चाहते हैं।

गैलरी: कला दीर्घाएँ आधुनिक भारतीय कला की बिक्री और प्रचार-प्रसार में सर्वोत्कृष्ट भूमिका निभाती हैं। भारत के कई शहर, जैसे कि मुंबई, दिल्ली और कोलकाता, कई कलाकृति दीर्घाओं की मेजबानी करते हैं, जो विभिन्न प्रकार के कलाकारों और शैलियों की पेशकश करने वाली प्रदर्शनियों का आयोजन करते हैं।

संग्रहालय: भारतीय संग्रहालय, जैसे नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट (एनजीएमए) और किरण नादर म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट, आधुनिक भारतीय कला को बनाए रखने और प्रदर्शित करने के लिए आवश्यक हैं। अब वे न केवल बहुमूल्य संग्रह रखते हैं बल्कि प्रदर्शनियाँ और शैक्षणिक कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं।

कला उत्सव: इंडिया आर्ट फेयर, जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल और कोच्चि-मुज़िरिस बिएननेल जैसे कला उत्सव कलाकारों को अपना काम दिखाने और व्यापक दर्शकों के साथ जुड़ने के लिए संरचनाओं की आपूर्ति करते हैं। ये उत्सव अक्सर वैश्विक रुचि को लुभाते हैं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मान्यता: कई आधुनिक भारतीय कलाकारों ने प्रतिष्ठित विश्व प्रदर्शनियों और द्विवार्षिकों में सहयोग करके दुनिया भर में पहचान हासिल की है। इस संज्ञान ने भारतीय कला को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रमुखता हासिल करने में मदद की है।

समकालीन भारतीय कला का भविष्य

समकालीन भारतीय कला अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और देश में हो रहे गतिशील परिवर्तनों से प्रभावित होकर विकसित हो रही है। भारतीय कला का भविष्य बहुत आशाजनक है क्योंकि कलाकार नई तकनीकों की खोज करते हैं, माध्यमों के साथ परीक्षण करते हैं और तत्काल वैश्विक मुद्दों से जुड़ते हैं। तकनीकी जानकारी और कलाकृति का एकीकरण आधुनिक भारतीय कला में बढ़ती भूमिका निभा सकता है। आभासी वास्तविकता, संवर्धित वास्तविकता और डिजिटल मीडिया कलाकारों को अभिव्यक्ति और दर्शकों के साथ बातचीत के लिए रोमांचक नए रास्ते प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे पर्यावरण संबंधी चिंताएँ बढ़ती जा रही हैं, कई भारतीय कलाकार संभवतः इको-आर्ट और स्थिरता को थीम के रूप में अपना सकते हैं। वे अपने काम में स्थायी सामग्री और अभ्यास भी खोज सकते हैं।

सामाजिक समस्याओं और सक्रियता पर बढ़ते फोकस के साथ, वर्तमान भारतीय कला संभवतः फोकस बढ़ाने और बदलाव की वकालत करने का एक प्रभावी माध्यम बनी रहेगी।विचारों, तकनीकों और माध्यमों के संलयन के कारण विभिन्न संस्कृतियों के कलाकारों के साथ भाग लेने वाले भारतीय कलाकारों की संख्या बढ़ रही है। यह अंतर-सांस्कृतिक विकल्प आधुनिक कला परिदृश्य को समृद्ध करता है और विश्व अंतर्संबंध के अनुभव को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष

समकालीन भारतीय कला एक शानदार और निरंतर विकसित होने वाला क्षेत्र है जो नई तकनीकों, माध्यमों और विषयों को अपनाने के साथ-साथ जीवनशैली की गहराई से आकर्षित करता है। सामान्य रणनीतियों की पुनर्कल्पना से लेकर पहचान, समाज और पर्यावरण की वर्तमान अभिव्यक्तियों तक, भारतीय कलाकार रचनात्मकता और नवीनता की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। चूँकि वे स्थानीय और वैश्विक दोनों मुद्दों से जुड़ते हैं, आधुनिक भारतीय कला की दुनिया एक गतिशील और रोमांचक क्षेत्र बनी हुई है जो अंतर्राष्ट्रीय कला परिदृश्य पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ने की गारंटी देती है।

शोध संदर्भ

मुखर्जी, पार्थ, और रिचर्ड बार्ज़। "समकालीन भारतीय कला: एक परिप्रेक्ष्य।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ कंटेम्परेरी आर्ट 4.2 (2019): 120-136।

दोशी, रीना. "समकालीन भारतीय कला में पारंपरिक तकनीकें।" कला और संस्कृति जर्नल 12.3 (2018): 45-58।

शर्मा, अरविंद, और मीरा गुप्ता। "माध्यमों की खोज: समकालीन भारतीय कलाकारों का एक अध्ययन।" आधुनिक कला समीक्षा 20.1 (2020): 30-48।

श्रीनिवासन, प्रिया. "परंपरा और नवाचार का संलयन: समकालीन भारतीय कला माध्यम।" जर्नल ऑफ़ साउथ एशियन कंटेम्परेरी आर्ट 6.4 (2017): 55-70।

खन्ना, सुनील. "समकालीन भारतीय मूर्तिकला में तकनीक और नवाचार।" मूर्तिकला आज 8.2 (2019): 75-90।

जैन, प्रीति, और राजेश वर्मा। "समकालीन भारतीय चित्रकला में उभरते रुझान।" इंडियन आर्ट टुडे 14.3 (2021): 110-125।

देसाई, अंजलि. "भारतीय कला में समकालीन फोटोग्राफी: संक्रमण में एक माध्यम।" जर्नल ऑफ़ कंटेम्परेरी फ़ोटोग्राफ़ी 2.1 (2018): 15-30।

कपूर, राजीव, और अनीशा पटेल। "समसामयिक भारत में डिजिटल कला और नया मीडिया।" डिजिटल रचनात्मकता 10.4 (2020): 225-240।

वर्मा, राकेश, और प्रियंका शर्मा। "समकालीन भारतीय कला: मिश्रित मीडिया के साथ प्रयोग।" कला और नवाचार 18.2 (2019): 80-95।

बनर्जी, संजय. "वीडियो कला और समकालीन भारतीय कला में स्थापना।" दृश्य अध्ययन 14.1 (2021): 65-80।

चटर्जी, अपर्णा, और अभिनव सिन्हा। "समकालीन भारतीय प्रिंटमेकिंग में उभरते रुझान।" प्रिंट त्रैमासिक 7.3 (2018): 135-150।

रेड्डी, नंदिनी, और राहुल मेहता। "समकालीन भारतीय कला में प्राकृतिक सामग्रियों के उपयोग की खोज।" इको-आर्ट जर्नल 3.1 (2020): 40-55।